विजयदान देथा

अनदेखा अन्तस

(राजस्थान और गुजरात में प्रचलित 'जसमा-ओडण' की प्रेमकथा)

ओडों का काम कल्याण का। स्वार्थ का स्वार्थ और परमार्थ का परमार्थ। भूख मिटाने के लिए तो कई झंझट करने पड़ते हैं, लेकिन प्यास बुझाने के लिए तो फक़त पानी ही पर्याप्त है। पानी भी दो तरह का। एक गहरे स्रोतों से निकालता हुआ वाकल पानी और दूसरा बरसात का पालर पानी। धरती के गर्भ से पानी प्राप्त करने के लिए कुएँ खुदवाने पड़ते हैं, बावड़ियाँ खुदवानी पड़ती हैं। उन्हें पक्का बनवाना पड़ता है, पानी निकालने के लिए कई उपकरण जुटाने पड़ते हैं। वहीं वर्षा के पालर पानी को सहेज कर रखना आवश्यक है। इसके लिए ताल-तलैया, बाँध-सरोवर बाँधने पड़ते हैं। फिर चौमासे में उन्हें भरने के लिए दूर-दूर तक आड़ बनवानी पड़ती है। और इन कामों का हुनर ओड ख़ूब जानते हैं। उनके खोदे हुए जलाशयों से बस्ती के लोग-बाग तो प्यास बुझाते ही हैं, पर उनके साथ-साथ असंख्य पंछी-जानवर भी अपने सूखे गले तर कर लेते हैं, आँतों की जलन मिटा लेते हैं। पनिहारिनें अपनी पायल खनकाती सिर पर बेवड़ा उठाए सारे घर का पानी वहीं से भरती हैं। इस तरह ओडों को परोक्ष रूप में कई जीवों की अबोली आसीस मिलती रहती है।

कई बार अपने नाम को अमर रखने के लिए भी लोग कुएँ, बावड़ियाँ, तालाब और बाँध बनवाते हैं। जगत् में अपने अस्तित्व की स्मृति छोड़ जाने का मुग़ालता पालते हैं। शायद यही सोच कर पाटन के राव खंगार ने हठ पकड़ा कि वह भी एक ऐसा जंगी सरोवर बनवाए जो दुनिया में सबसे बड़ा हो और भविष्य में भी कोई उसकी होड़ न कर सके। जोशी-पण्डितों को राजा की यह सनक बहुत पसन्द आयी। सराहना के पुल बाँधते हुए पंचांग टटोले और श्रेष्ठ मुहूर्त निकाला। राजा ने इस सम्बन्ध में सभी रजवाड़ों को अदेर आवश्यक सूचना भिजवा दी कि इस मांगलिक कार्य के लिए हज़ारों ओडों की ज़रूरत है। ख़बर मिलते ही मालवा, मेवाड़ और मारवाड़ जैसे राजवाड़ों से झुण्ड-के-झुण्ड ओड परिवारों ने गुजरात का रास्ता लिया। राह चलते प्रत्येक ओड परिवार के मुँह से राम-नाम के साथ-साथ राव खंगार का नाम भी सुनायी पड़ने लगा। तीन-चार बरस को रोजगार पक्का। काम की तलाश में इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं! कहने वालों ने ठीक ही कहा है कि जन्म देने वाले से रोजगार देने वाला बड़ा होता है।

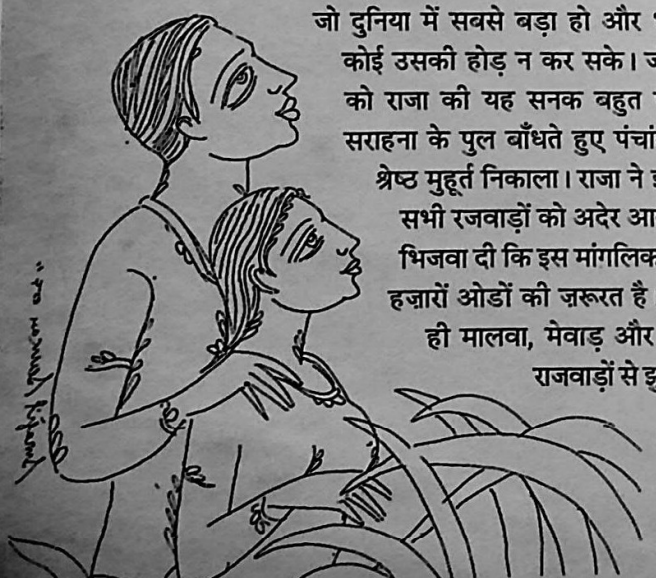

वैसी अचीती सहूलियत के विश्वास पर तीन-तीन सौ कोस की दूरी तक ओड नाम का कोई प्राणी तक पीछे नहीं रहा। उन सबके साथ-साथ गधे-गधियों के भाग जागे। एक ही ठौर घास चरेंगे, मोटे-ताजे होंगे और तबीयत से चींभों-चींभों का राग अलापेंगे। शायद भूले-भटके एकाध गुणीजन तो उनके तरानों का मर्म समझेगा। मनुष्यों की भीड़-ही-भीड़ और गधों के झुण्ड-के-झुण्ड धरती पर समा नहीं रहे थे। गधों की पीठ पर लकड़ी के ढाँचे, जिन पर कुदालें, फावड़े, गुदड़ियाँ, बरतन-बासन और तरह-तरह का अगड़म-बगड़म कबाड़। दूध पीते बच्चे, गोद में उठाए बालक, पाँवों चलते टींगर, मुटियार और बूढ़े-बुजुर्ग सब एक ही दिशा में बढ़ रहे थे। ओडों के कन्धों पर भी कुदालें, फावड़े और खाली गूणतियाँ। चिलमों के उड़ते धुएँ के साथ, दूरी काटने का अदम्य हौसला! चलना, चलना और चलना!

जो चल पड़ते हैं, वे देर-सवेर अपनी मन्ज़िल पर पहुँचते ही हैं। अलग-अलग ठौर-ठिकानों से आये ओड वहाँ पहुँचते ही अपनी-अपनी झोंपड़ियाँ बनाने में जुट गए। देखते-देखते एक भरी-पूरी बस्ती बस गई। चूल्हों की जगह चूल्हे और मटकियों की जगह मटकियाँ सज गईं। अपने-अपने बदन में खोयी स्त्रियाँ रोटी-पानी के जुगाड़ में लग गईं। गधों ने राहत की साँस ली। वे नए चारागाह में बेफिक्र हो चरने लगे।

वैसे तो मेहनतकश ओड स्त्रियाँ रूपवान होती हैं, लेकिन जसमा ओडन की ख़ूबसूरती के सामने इन्द्रलोक की अप्सराएँ भी पानी भरती थीं। उसे देखने पर विश्वास ही नहीं होता कि विधाता को ऐसा साँचा मिला तो मिला कहाँ से? मानो हज़ार स्त्रियों का रूप एक ही देह में समा गया हो! उसका रूप देखकर लगता कि पुराने कवियों की ढेरों-ढेर उपमाएँ फीकी पड़ गईं हो। ठौर-ठौर से आईं ओड-स्त्रियाँ झुण्ड बना कर जसमा को देखने आतीं। बूढ़े और बुढ़ियाएँ बिना देखे ही उसके रूप

की चर्चा सुनकर थुथकी डालते और जब वह उनके सामने आती तो वे अपनी सुध-बुध ही खो बैठतीं। दो बच्चे होने पर तो उसका रूप और अधिक निखर आया! लज्जा से सिमटती जसमा कई बार सोचती कि किसी कलजीभी औरत की नज़र लग जाती और वह बदसूरत हो जाती तो आफत ही मिट जाती! एकटक घूरने वाली आँखों से पीछा छूट जाता। और तो और सुहागरात के मद्धिम उजाले में उसके रूप की झलक पड़ते ही पति की आँखें मुँद गईं। ऐसा झटका लगा कि नौ महीने तक उसे छूने का साहस तक नहीं जुट सका। उसके ख़्याल से ऐसा अनोखा रूप तो फकत देवताओं के लिए ही होता है, मृत्युलोक के जीवों से उसका कोई वास्ता नहीं।

संयोग की बात कि कुछ दिन बाद राव खंगार घोड़े पर सवार हो सरोवर की खुदाई देखने की मंशा से वहाँ आया। यकायक उसकी नज़र पाल से नीचे उतरती जसमा की पीठ पर पड़ी और अगले ही क्षण मूर्च्छित हो गया। यदि पास खड़े दो ओड युवक उसे नहीं सँभाल पाते तो वहीं ढेर हो जाता। समाचार पहुँचने में देर हुई-सो-हुई, पर राज-दरबार से चार घोड़ों का रथ आने में कतई देर नहीं हुई। अन्त: पुर की अत्यधिक रूपवती दासियाँ उस मूर्छा का टोना जानती थीं। तुरत-फुरत रथ में सुलाकर उसे रंग-महल की सेज पर सुलाया। आख़िर मूर्छा टूटने पर राजा ने डरते-सहमते पलकें उघाड़ीं। याचक दृष्टि घुमा कर उसने इधर-उधर देखा। पलंग के पायों से सटी हुई चारों दासियाँ पंखियाँ झलती हुई मुस्कराईं, जिसका मर्म पाटन का राजा अच्छी तरह समझता था। अदेर आँखें मूँद कर बड़बड़ाने लगा, ''नहीं... नहीं... ओडन... ओडन!''

तत्पश्चात् दो-तीन बार फिर पलकें उघड़ीं। दासियाँ फिर मुस्कराईं। उसके होंठों से फिर वही जाप, ''नहीं... नहीं... ओडन... ओडन!'' पर चौथी बार उसके जाप का राग बदल गया, ''तुम सब तो बिजूका हो... बिजूका! रूप-रूप तो सरोवर की पाल पर दमक रहा है!'' सोलह सिंगार सजी तीनों रानियों का भी कुछ वश नहीं चला। राजा के अधरों पर तो फकत एक ही सुमिरन, ''नहीं... नहीं... ओडन... ओडन...!''

सारे शहर में जसमा ओडन के रूप में हल्ला फूट गया। लेकिन राजा की मूर्छा और सुमिरन की बात सुन कर किसी की भी हिम्मत सरोवर के पास तक फटकने की नहीं हुई। दीवान और सेनापति का भी दाँव नहीं लगा। उसका मन तो मार फड़फड़ाने लगता, पर हिम्मत एकदम पस्त हो गई थी। ऐसे कारनामों के लिए राजा की कड़कती खीज किसी से भी छिपी हुई नहीं थी। बारी-बारी से सभी सजा भुगत चुके थे।

दूसरे दिन अल्ल-सवेरे राजा ने किसी दासी या चाकर को पास नहीं बुला कर, अपनी इच्छा से अपने ही हाथों पहली बार स्नान किया। रेशमी लिबास पहना। इत्र-फुलेल की ख़ुशबू छिड़की। दो-तीन बार काले-भँवर बाल सँवारे। सुनहरी मोजड़ियाँ पहनीं। पाँवों से मानो सूरज की किरणें चमक रही हों। उन पर इत्र लगाया अस्तबल में जाकर अपने-आप ही सफेद बुर्राक घोड़े पर जीन कसी और सरोवर की पहचानी राह शुरू होते ही घोड़े को एड़ लगाई। सरपट उड़ते हुए उसे तेज हवा लगी। दुबारा के शराब पर मानो पाँखें उग आई हों। उसकी चेतना के परे ही होठ फरफराने लगे, ''मैं पाटन का सिरमौर राव खंगार हूँ... राव खंगार और वह एक आदमी ओडन! गधों की पीठ पर भर-भर गुणतियाँ माटी ढोने वाली। पाज पर माटी का ढेर लगाने वाली। धूल से अटी हुई। राजा के मन की बात सुनकर अपना भाग्य सराहेगी!''

किन्तु राजा की मनचीती हुई। उसके चेहरे की झलक देखते ही उसे लगा कि आज दिन तक उसने किसी स्त्री का स्वाद ही नहीं चखा है। औरत का रूप तो जैसे आज पहली बार ही देखा हो! फकत औरत जात के भरम-ही-भरम में लिपटा रहा। अभी-अभी घोड़े पर सवार राजा ने सरोवर की तीन बार परिक्रमा लगाई। तमाम ओड-ओडनियों ने 'खम्मा-घणी', 'खम्मा-घणी' की जय-जयकारों से आसमान ऊपर उठा लिया, मगर जसमा तो जैसे निपट अन्धी और बहरी हो! अपने गधे को हाँकने के उन्माद में उसके घोड़े की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। वह तो सिर्फ़ अपने दन्द-फन्द में मगन! ईकड़ से बुनी गूणतियों में लीन। धूल से सटी सूरत ऐसी दिखाई दी मानो चाँद पर छितरी बदरिया छाई हो। रज्जी पर स्वेद की लकीरें ऐसी लगतीं जैसे सुरंगें माँडने उकेरे हुए हों।

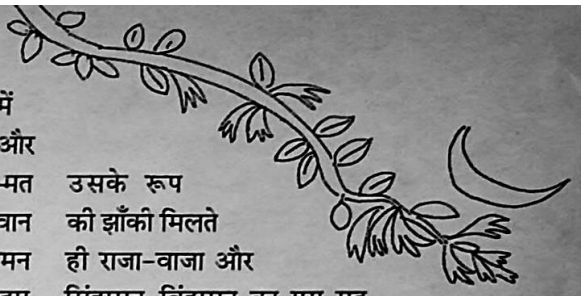

उसके रूप की झाँकी मिलते ही राजा-वाजा और सिंहासन-विंहासन का पूरा मद झड़ गया। राज्य की हेकड़ी मिट्टी में मिल गई। उसने आवाज़ देने की व्यर्थ चेष्टा की, पर जिह्वा तो मानो तालू से चिपक गई हो। आख़िर घोड़े से उतरकर वह पास आया। हकलाते हुए पूछा, ''रूपसी, तेरा नाम...!''

एक बार तो उसने सुनी-अनसुनी कर दी। गधे का लम्बा ललाट सहलाते-सहलाते सरोवर की पाल से नीचे उतर आई! राजा की नज़र और उसकी वाणी का मैल उससे किंचित भी छिपा नहीं रहा। उसने तो अब तक किसी भिखारी को भी कड़वा ज़वाब नहीं दिया था। लेकिन यह तो राजा होकर मँगते से भी बुरा क्यूँ दिख रहा है? काफी दूर तक उसके पीछे चलते-चलते बमुश्किल वही सवाल फिर दुहराया, ''रूपसी, तेरा नाम तो बता...?''

जसमा के मन में मामूली मज़ाक करने की जँची। इन राजा-महाराजाओं का पानी तो परखे...। इतने बरस केवल नाम-ही-नाम सुना था। माटी और गधों की पूजा से फुरसत ही नहीं मिलती! पहनावा तो चमाचम चमक रहा है, पर हिम्मत मसोते से भी बदतर! शहर की नाईं मीठे सुर में बोली, ''मेरा नाम, भगवान का नाम तो नहीं है, सो उसकी माला जपोगी!''

किसी मनुष्य बन्दे की ऐसी अमृत-वाणी हो सकती है...? जैसे वीणा के तार झनझनाए हों। ऐसे रूप के साथ, यही... केवल यही बोली सुहाती है। गज़ब आश्चर्य की बात उसने तो अपने काम की उपासना के दौरान राजा की तनिक भी परवाह नहीं की। कहीं उसका ध्यान बँट नहीं जाए! निर्बल की नाईं उसका पीछा करते हुए फिर दीन भाव से पूछा, ''एक बार तेरा नाम बता तो सही, मैं उसे आठों पहर जपूँगा...।'' राजा के मन में अकस्मात् एक नयी बात कौंधी— चलो, और कुछ नहीं तो उसके पीछे-पीछे चलने से ही उस में कुछ-कुछ बुद्धि तो बढ़ने लगी! पहले तो ऐसी बातें उपजती ही कहाँ थीं। अचानक खिलखिल हँसी सुनकर चौंका, मानो उगते सूरज की किरणें

हँसी हों। अचरज़ करते पूछा, ''मेरा नाम क्यों जपोगे... और वह भी आठों पहर, तुम्हारी अक्ल भाँग तो नहीं चरने लगी... ?''

बेचारे राजा की बची-कुची हिम्मत भी पैंदे बैठ गई। इस रूप और इस वाणी का तो जादू ही निराला है। इसने तो शायद मृत्युलोक में जन्म ही लिया हो! मानो किसी अदृष्ट-लोक से अवतरित हुई हो! सम्भवतया यह राजा-महाराजाओं के ठाठ-बाट देखना तो दूर, उनके बारे में सुना तक नहीं हो। बताने पर ज़रूर रुतबा मानेगी। यह बात तो बढ़िया सूझी। उतावली दरसाते कहा, ''मेरा नाम राव खंगार है— राव खंगार! पाटन का राजा हूँ। तुम लोगों को काम पर लगाने की ख़ातिर यह सरोवर खुदवाने की इच्छा हुई। तू कहे तो मैं हर रोज़ तुझे सोने की मोहर मजूरी में दूँ... !''

जसमा को यह बात काफी बुरी लगी। सुगम्भीर भाव से ज़वाब दिया, ''मेरा नाम जसमा ओडन है।— जसमा। सब जानते हैं कि ऐसी बेहूदी बातें मुझे सपने में भी नहीं सूझतीं। मजूरी से एक कौड़ी भी अधिक लेना गाय का लहू समझती हूँ। तुम जैसे अनेक ठाकुरों ने, सेठ-साहूकारों ने मुझे बहुतेरे लालच दिए, पर मैंने उधर कान तक नहीं दिया। मेरे गधे भले, लकड़ी का ढाँचा भला और यह माटी भली! काम, काम और काम ही मेरा इष्ट है। मेरी आस्था है! लोभ-लालच के मारे इधर-उधर झाँकती भी नहीं। रही सुख-दुख की बात, अपने से सुखी मैं ईश्वर को भी नहीं मानती! मैं बामन-पण्डितों की तरह पढ़ी-लिखी भी नहीं हूँ। पर तुम्हारी बातें सुनकर मुझे लगा कि जानना चाहो तो तुम्हें बहुत-कुछ बता सकती हूँ। समझ नहीं पड़ता कि तुम जैसा ठोट राजा क्योंकर राज चलाता है? कैसा न्याय करता होगा... ?''

जब वह किशोर हुआ ही था, तब पण्डितों से ख़ूब विद्या सीखी थी— क्या महाभारत, क्या रामायण, क्या वेद-पुराण, क्या पंचतन्त्र। अब यह जसमा ओडन कोई नयी विद्या सिखाना चाहे तो सिखाने दो। इसी बहाने उसकी संगत का अवसर तो मिलेगा! माटी खरीदने का गन्दा काम छुड़वाकर इसे सीने की मैड़ी में रखूँगा। हमेशा दोनों जून नया भोजन पाकर यह बहुत खुशी होगी। वहाँ धूल का तो वास्ता ही नहीं। बिना नहाए भी दमकती रहेगी, फिर नहाने के बाद तो कहना ही क्या, जैसे पूनम का चाँद नहाया हो! इससे पहले कई सुन्दर-सुन्दर औरतों का सहवास मिला। पाँच सातेक नखराली औरतें नहीं मानीं तो उनके साथ ज़बरदस्ती भी करनी पड़ी। पर जसमा की तो रंगत ही निराली है! कैसा भी ज़हरीला साँप इसे डसते समय सात बार सोचेगा! इसका रूप तो ऐसा पवित्र है, जिसे देखने का मन तो बार-बार मचलता है, पर छूने का मन ही नहीं करता। अन्य रानियों और बाँदियों के ठाट देखने पर यह तो चकित रह जाएगी। पति को छोड़ कर मेरे आगे-पीछे न घूमे तो अपना नाम बदल दूँ। इसके नाख़ून की एवज में सारा राज्य भी लुटा दूँ, यदि यह मान जाए तो... ! कम-से-कम हज़ार विधाता ने मिल-जुल कर ऐसे रूप और ऐसी अमृत वाणी का साँचा गढ़ा होगा! जब वह स्वयं अपनी मर्ज़ी से फँसने को तैयार है तो मग़जमारी करने की ज़रूरत ही क्या है! ऐसे अकल्पनीय रूप की महारानी और इतनी भोली! उसने बिना किसी हील-हुज्जत के उसी क्षण हामी भरी, ''तू जो भी सिखाए, सीखने को तैयार हूँ। पर यहाँ जंगल में नहीं, महलों में, स्वर्ण निकेतन में! उसके सुनहरे चित्र देखकर तू बौरा जाएगी। यदि तूने मुझे पारंगत कर दिया तो अमोलक हीरे-मोतियों से तेरी टोकरी भर दूँगा। तेरी इच्छा होगी तो आधा राज्य सौंप दूँगा। मुझे ऐसी-ऐसी विद्या सिखा, जिसे अब तक कोई सीख नहीं सका!''

''लेकिन अपना काम छोड़कर मैं तो स्वर्ग में भी नहीं जाना चाहती! काम करते-करते ही काफी-कुछ सिखाती चलूँगी। सबसे पहले धरती को बाँचने का हुनर बताऊँगी। बस, आँखें खुली रखने की ज़रूरत है! इस सरोवर के बहाने हम इसका कलेजा खोदते हैं, अनगिनत घाव करते हैं, फिर भी वह मुस्कराती है! जब ज़रूरत के हिसाब से इसका कलेजा खोदना बन्द करेंगे और इसी चौमासे में वह छिलाछिल भर जाएगी, तब हज़ारों पंछी-जानवर, ढोर-डाँगर और बटोही इसका पानी पीकर अपनी प्यास बुझाएँगे। पनिहारिनें पायल झनकाती पानी भरेंगी। कुओं के बहाने गहरे घाव खोदेंगे, तब भी वह लहू की बजाये ऐसा अमृत सौंपेगी, जिसके सहारे हम सबकी काया टिकती है! हल की तीखी नोक से उसकी देह उजाड़ कर जब उस में बीज गेरते हैं तो एक दाने के बदले अनेक दाने लुटाती है। धरती पर चलने वाले प्राणियों को बाँचो, हवा में उड़ते पंछियों को बाँचों, झाड़-बिरछ और फूलों को बाँचो, चाँदनी और उजाले को बाँचो। रात के अँधेरे में टिमटिमाते अंसख्य तारों को बाँचो तो सुख और आनन्द का पार नहीं रहेगा। एक बात पूछती हूँ। सच बताना कि तुमने बादल, बिजली और बरखा को कभी भूल-चूक से भी बाँचा है? बरसती बूँद-बूँद में तो अथाह ज्ञान भरा है... !''

राव खंगार तो उसकी वाणी सुनकर ही तुष्ट हो गया, पर उसकी बातों का झीना मर्म तो कुछ पल्ले ही नहीं पड़ा। उसका मज़ाक उड़ाए जैसी औकात तो उसकी नहीं थी, फिर भी उसके अज्ञान का आभास कराने की मंशा से गुमान के लहज़े में कहने लगा, ''ये भी कोई बाँचने की चीज़ें हैं... ! मेरे गुरुजी की सीख के अनुसार महाभारत बाँचो, गीता-रामायण बाँचो, पंचतन्त्र बाँचो तो बुद्धि पर ऐसी चमक आए कि क्या कहना... !''

जसमा ठहाका मार कर इतने ज़ोर से हँसी कि राव खंगार का सारा जोश ही पैंदे बैठ गया। लेकिन पाण्डित्य की दृष्टि से वह भी किसी से कम नहीं है। शास्त्रों की कई सूक्तियाँ उसे याद थीं। बरसों पहले रटे हुए कई श्लोक उसे आज भी कण्ठस्थ हैं। वह सुनना चाहे तो अभी सुना दे। विद्या और ज्ञान की शक्ति भी कम नहीं होती। तिस पर पाटन का सिंहासन और उसका अखूट खजाना! आँखों से देखने की देर, वह तो अपनी सुध-बुध ही बिसर जाएगी! न राजा का पीछा छोड़ेगी और न राजमहल से एक कदम बाहर रखेगी।

बोलने से पहले जसमा के दमकते ललाट में त्रिशूल-सा उभर आया। धीरज के स्वर में बोली, ''शुरुआत में आपसे एक बात मैंने छिपाई, इसलिए कि तुम मेरे लिए निपट अजाने थे, दुराव रखना ही चाहिए था। अब कुछ पहचान हो गई तो बता रही हूँ कि तुमने जिन पोथियों के नाम बताए उन्हें अच्छी तरह समझने के बाद ही कह सकती हूँ कि कुदरत के कण-कण में उनसे ज़्यादा ज्ञान भरा है! हाँ, अलबत्ता उन्हें लिखने वाले बहुत अनुभवी और ऊँचे ज्ञानी थे। लेकिन सुनहरे महल और उनकी चमकती पच्चीकारी को देखने पर भी मेरे मन में रत्ती भर भी ईर्ष्या नहीं होगी। उलटे मेरी झोंपड़ी ज़्यादा सुन्दर लगेगी! मनुष्य बाहर

की सम्पत्ति से मालदार नहीं बनता, भीतर की पूँजी से बड़ा बनता है। रात को समय मिले तो ज़रूर आना, अपने पति से मिलाऊँगी। वह सचमुच मुझसे अधिक गुणवान हैं। दो नन्हे-मुन्ने बच्चे हैं मेरे! एक बेटा और एक बेटी। मेरा वश चला तो उन्हें पुख्ता मनुष्य बनाऊँगी, जो भीतर से भी धनवान हों! उनके अन्तस् में चाँद जैसी चाँदनी घुली रहे! हमारी तरह काम ही उनका धर्म और ईश्वर हो और वे उसी की पूजा करें! काम करते-करते ही बात करने का मन हो तो दिन के समय चाहे जब आ जाना।'' कुछ सोच कर थोड़ी देर बाद कहा, ''जो राजा भीतर से इतना कंगाल हो उसे राज करने का कोई अधिकार नहीं है।''

भरी हुई गूणतियाँ गधे की पीठ पर लाद कर वह पाज की तरफ़ मुड़ी। एक गँवार ओडन के मुँह से ऐसी बातें सुनकर राजा हतप्रभ-सा हो गया। कुछ देर तक चुपचाप पीछा करने के बाद उसके मन में घुमड़ती घुटन पूरी मिट गई, तब उससे बोले बिना रहा नहीं गया। अचरज़ और हताशा के लहज़े में कहने लगा, ''मैं तो तुम्हें अक्षत युवती मान रहा था! दो बच्चों की माँ का शरीर ऐसा गठा हुआ नहीं होता! तेरा पति कितना भाग्यशाली है कि उसे तुझ जैसी बहू मिली। सच बताना, दोनों एक ही खाट पर सोते हो... ?''

जसमा ने बीच में ही मुस्कराते हुए प्रतिवाद किया, ''खाट पर तो हम अब तक नहीं सोए! साफ-सुथरा आँगन ही हमारी सेज है! सहवास की वेला में एक-एक तारे को बीनकर अपने हृदय में जड़ती हूँ। तुम कभी इस तरह के आनन्द को बरतकर तो आजमाओ! जब दो बार मेरी कोख में आशा का संचार हुआ तो पहले तेरस का चाँद कोख में जड़ा और दूसरी बार पूनम का! मेरे कहने से ही रानीजी को पूछना कि उन्होंने कोख में किस चाँद या सितारे को धारण किया? इसमें संकोच जैसी कोई बात नहीं। यदि तुम नहीं पूछ सको तो रानीजी को यहाँ ले आना, मैं पूँछ लूँगी। यही तो बातें हैं पूछने की!''

वह आकबाक-सा मुँह फाड़े ओडन की आँखों में घूरने लगा। कुछ होश आते ही आश्चर्यचकित होकर पूछा, ''पाटन की रानियों को यहाँ लाऊँ, ओडो की बस्ती में... तेरी अक़ल तो नहीं मारी गई... ?''

जसमा ने फिर ज़ोर से ठहाका लगाया। हँसते-हँसते ही कहा, ''मेरे ख़्याल से राजा तो रानियों से बढ़कर ही होता है। जब वह एक भिखारी के उनमान मुझ जैसी ओडन के पीछे-पीछे लार टपकता है, तब उसकी शान नहीं घटती? फिर रानियों के यहाँ आने पर उनका मान क्योंकर घटेगा? ऐसी दोगली मर्यादा से राजा का काम चल सकता है, हम ओडो का नहीं चलता! कल मेरी पीठ देखने से ही तुम बेहोश हो गए थे, तभी मुझे अनुमान हो गया कि पाटन के राजा को मेरे तलवे चाटने में कतई आनाकानी नहीं होगी!''

राजमद को झटका लगते ही उसके चेहरे पर खीज उभर आई। कड़कते सुर में पूछा, ''क्या कहा... मैं तेरे तलवे चाटूँगा... ?''

जसमा ने मुस्कराते हुए धीमे से कहा, ''मैं चाटने दूँ तब ना... !''

राजा अपने ही जाल में फँसता गया। हकलाते पूछा, ''क्या मैं इतना गया-गुज़रा हूँ कि तू मुझे अपने तलवे भी नहीं चाटने देगी? एक अदनी ओडन का इतना गुमान... ! याद रखना मैं तेरे तलवे चाट कर ही रहूँगा। सच्ची मुहब्बत गाल, होंठ, हथेली और तलवों में भेद नहीं करती! अभेद की पवित्र भावना ही प्यार की सही पहचान है... !''

जसमा ने ख़ुशी का अभिनय करते गम्भीर स्वर में पूछा, ''क्या सचमुच आप मुझसे सच्ची प्रीत करते हैं... ?''

''हाँ सच्ची प्रीत... सोलह आने सच्ची प्रीत... !''

होठों तक उछली मुस्कान को दबाने की व्यर्थ चेष्टा करते जसमा ने फिर पूछा, ''मुझसे पहले कितनी रानियों और बाँदियों से सोलह आने सच्ची प्रीत कर चुके हैं... ?''

राजा कुछ देर तक असमंजस में उलझा रहा। फिर यह सोच कर कि राजा पर कैसा अंकुश! गर्व के साथ कहने लगा, ''रानियाँ तो केवल तीन... पर बाँदियों का कोई हिसाब ही नहीं! राजा तो जितनी औरतों से प्रीत करे, उसकी उतनी ही शान बढ़ती है। उसकी सत्ता और शक्ति की यही पहचान है। वह तो भगवान का अवतार होता है! तेरा रूप देखकर मुझे पहली बार यह महसूस हुआ कि पहले वाली प्रीत सच्ची नहीं थी, प्रीत का वहम था, फ़क़त वहम... !''

राजा को आश्वस्त करने की मंशा से जसमा ने कहा, ''मानती हूँ, आपकी बात एकदम सही मानती हूँ। यदि मुझसे बेशी रूप वाली कोई अप्सरा मिल गई तो प्रीत जो आपकी खरी मोहब्बत है, वह वहम की धुन्ध मात्र रह जाएगी! और तुम्हें नई अप्सरा से सच्ची प्रीत हो जाएगी— सोलह आने सच्ची प्रीत... !''

राजा ने चुनौती के लहजे में कहा, ''ऐसी बात सपने में भी नहीं हो सकती... तुझसे अधिक रूपवती अप्सरा सारी दुनिया में नहीं मिल सकती, मेरे कहे पर विश्वास कर... ।''

''कैसे विश्वास करूँ... ?'' जसमा ने मजबूरी के आशय से जवाब दिया, ''यह दुनिया बहुत लम्बी-चौड़ी है। सभी सुन्दर औरतों की तलाश करने में हज़ार जन्म भी थोड़े हैं! मेरे हिसाब से तो पहुँच के परे की औरत सबसे ज़्यादा खूबसूरत होती है... !''

उस मनपसन्द बातचीत के बीच जसमा के पति ने दोनों की पीठ पीछे बाधा उपस्थित कर दी, ''बातचीत भले ही करो, पर काम में नुकसान नहीं होना चाहिए। अपने लिए काम ही राम है... !''

दोनों ने चौंक कर पीछे देखा। जसमा ने बेहिचक परिचय कराया— ''ये मेरे पति हैं, मेरे बच्चों के पिता! इनके अलावा दूसरा पुरुष मुझे नज़र नहीं आता... !''

पाटन के राजा ने नज़र भर कर उस बन्दे को निहारा— मनुष्य क्या था, प्रत्यक्ष अग्नि का ही वंशज! बजर-बट्ट भरपूर लम्बा-तगड़ा। साँवला रंग। सिर पर घुँघराला ताज, काला-स्याहा। लम्बी भुजाएँ। माँसपेशियाँ मछलियों-सी थिरकतीं। प्रीत-सनी मतवाली आँखें! तीखी नासिका। दमकती बत्तीसी। पतले होंठ। सुहानी सूरत।

मौन का बोझ असह्य लगा तो जसमा ने हाथ का इशारा करते कहा, ''ये पाटन के राजा हैं, मुझसे सच्ची प्रीत करते हैं... !''

''कोई बात नहीं, प्रीत करना बुरा नहीं है... !''

''लेकिन प्रीत के बदले आधा राज्य देना चाहते हैं।''

''यह बुरी बात है! प्रीत के बदले भाव-तनाव तो वेश्याओं से किया जाता है! प्रेम तो

बदले में निखालिस प्रेम की ही माँग करता है। तू इनसे प्रेम करे तो मुझे एतराज नहीं होना चाहिए! यह बहुत बेजा बात है...!''

''ऐसे लिजलिजे आदमी की प्रीत फकत रानियों और बाँदियों के भाग्य में ही लिखी होती है!'' फिर हँसते-हँसते कहने लगी, ''इस तरह के राजा या महाराजा से प्रीत करने की ख़ातिर मेरी गधी भी तीन बार सोचेगी... तीन बार! दुनिया की किसी औरत को मँगते वाली प्रीत सपने में भी नहीं सुहाती! प्रीत करे तो रिरियाने की दरकार ही कहाँ है! भले ही वह राजा हो चाहे अखूट मायापति। सच पूछिए तो मुझे बेचारी रानियों और बाँदियों पर तरस आता है कि उन्हें एक दुलमुल राव-उमरावों से मोहब्बत करनी पड़ती है!''

पाटन के प्रतापी राजा की आज बेजा कलई उतरी! युद्ध में बिना लड़े ऐसी बुरी हार तो कभी नहीं हुई। यह कोई औरत है या कोई बला है! न इसके रूप की सीमा और इन इसकी निर्लज्जता का कोई दायरा! पति के रूबरू ऐसी गन्दी बात करने में इसे किंचित् भी संकोच नहीं हुआ? और न पति को ऐसी फूहड़ बात सुनकर गुस्सा ही आया! सचमुच इस दम्पती के सामने तो वह जूँ के समान है! आज पहली बार उसे अपना सही आकलन करने का अवसर मिला। जाने यह कैसी औरत है और यह कैसा आदमी है! कभी इस तरह के व्यक्तियों से सावका भी तो नहीं पड़ा। स्वार्थी तो बिल्कुल नहीं है! किसी भी तरह के लोभ-लालच से कोसों दूर! या तो राज-दरबार के लोग मनुष्य नहीं है या ओड जाति के ये दोनों लोग-लुगाई मनुष्य नहीं हैं! यह तो बानगी ही अलग है। यह तो किस्म ही दूसरी है! क्या करने से ये कब्जे में आ सकते हैं? सत्ता, माया और तलवार की शक्ति को तो ये शक्ति ही नहीं मानते! और भीतर की शक्ति का तो उसमें तनिक भी अंश नहीं है। वह तो हमेशा से ही बाहर की सम्पदा को ही सब कुछ मान रहा था। किसी मन्त्र या जादू-टोने से यह आन्तरिक शक्ति हाथ नहीं लगती। यह तो एक जन्मजात अन्दरूनी देन है। कुदरत के हाथों सौंपी हुई, जिसका इन्होंने अच्छी तरह पोषण किया है। ऐसी विरासत तो भाग्य से ही मिलती है। फलीभूत होती है। आया तो था राज्य सिंहासन के रुतबा जताने, पर जसमा और उसके पति ने तो उसे इल्ली से भी गया-गुजरा साबित कर दिया...। ऐसी बातें न तो उसने शास्त्रों में ही बाँची और न पण्डितों के मुँह से ही सुनीं। यह तो जैसे बादल-बरखा की वाणी हो!

जसमा ओडन पाज पर गुणतियाँ डाल कर वापस लौट रही थी, तब तक पाटन का राव खंगार वहीं खड़ा रहा, जैसे एक ठौर चिपक गया हो। न एक बाल भर आगे बढ़ा और न तिनका भर पीछे खिसका। उसकी ऐसी हालत देखते ही पहले तो हँसी का वातचक्र ही फूट पड़ना चाहता था, पर निरीह राजा के भीतर आलोड़न का आभास होने पर उसे थोड़ी-सी चिन्ता होने लगी। पास आते ही मीठे सुर में पूछा, ''ऐसी क्या बात हो गई? किसी गुत्थी में उलझे हो...?''

राव खंगार की सारी ख्याति डगमगाने लगी, फिर भी उसने झुकना नहीं चाहा। तनिक रुआब से जवाब दिया, ''बात तो हुई जैसी ही हुई है। पर अभी बताना नहीं चाहता। तीन बरस बाद सरोवर पूरा खुदने पर मन की बात दरसाने की योग्यता मुझमें हुई तो अवश्य बताऊँगा! मगर उससे पहले एक छोटी-सी बात अभी बताना चाहता हूँ, मान ले तो मैं जीवन भर तेरा एहसान मानूँगा। पहले वचन दे...!''

''पहले वचन कैसे दूँ...! कितनी बचकानी बात करते हैं? मानने जैसी बात होगी तो पल भर देरी नहीं करूँगी और न मानने जैसी होगी तो उम्र भर नहीं मानूँगी।''

''बात तो मानने जैसी ही है, पर कहने में संकोच होता है...।''

''ठहरो मत, चलते रहो... मेहनत और पसीने की नियामत ही मेरे लिए सब कुछ है! इसका नुकसान मैं झेल नहीं सकती। पूरा काम न करूँ तो मुझे नींद नहीं आती। निशंक बताओ...।''

''बिना बताए मुझे चैन नहीं पड़ेगा। मगर बताना आसान भी नहीं है! तू वचन देती तो मेरा हौसला बढ़ जाता। फिर भी बताना ज़रूरी है कि जबसे तुम लोग काम पर लगे हो, उस दिन से मैं मजदूरी तिगुनी करना चाहता हूँ। प्रत्यक्ष देखने पर ही मुझे पता चला कि तुम लोगों का काम बहुत कठिन और कल्याणकारी है!''

जसमा ने जो बात सोची, वही सामने आई! गहरा विचार करे जैसा मसला नहीं था। सहज भाव से बोली, ''यदि शुरुआत से ही यह मजदूरी खुल जाती तो किसे भी ऐतराज नहीं होता। लेकिन अब यह बात मानने पर व्यक्ति यही सोचेगा कि मेरी प्रीत की वज़ह से ही यह दक्षिणा मिली है। दूसरों की बात तो दरकिनार, मुझे और मेरे पति को भी यह इनायत मंजूर नहीं होगी। हम ओड हैं, बामन नहीं! बेबात की यह दक्षिणा हमें पचेगी नहीं! फिर भी इतनी जल्दबाजी करने की ज़रूरत ही क्या है? तीन बरस बाद जब यह तालाब हिलोरें लेने लगेगा तब अपने पसीने का उचित प्राप्य हम राजी-खुशी कबूल कर लेंगे। पर होना चाहिए प्रीत की बजाय मेहनत और पसीने का मोल! आपको मंजूर हो तो मैं अभी वचन देने को तैयार हूँ...।''

पाटन के राव खंगार को तत्काल कुछ उत्तर नहीं सूझा। तब जसमा ओडन का धीरज छूटने लगा। तकाजा करते बोली, ''कुछ जवाब तो दो... यों चुप रहने से क्या पता चलेगा!'' राजा का हृदय होंठों की राह प्रकट हुआ, ''आज दबाव देने का कुछ मतलब नहीं है। जिस शुभ-घड़ी में यह तालाब छिलाछिल भर उठेगा, तब तट पर खड़े रहकर जो भी जवाब सूझेगा, वही सच्चा जवाब होगा...।''

राव खंगार के ये खरे बोल सुनकर जसमा ओडन विचलित तो जरूर हुई, पर उसके कदम डगमगाये नहीं! उतावली दरसाते कहने लगी, ''चलते चलो, रुको मत...।''

उसने मुस्कराते हुए अदेर जवाब दिया, ''अब साथ चलने की शक्ति नहीं है। रुकना ही पड़ेगा। पर याद रखने की सारी बात यही है कि हम सात कदम से अधिक साथ चले हैं...।'' इतना मन्त्र सुनाकर पाटन का राव खंगाल तत्काल मुड़ कर तेज क़दमों से चलने लगा। जसमा ओडन थोड़ी देर ठहर कर तब देखती रही, जब तक वह ढलान से उतरकर अदीठ नहीं हो गया! उम्र के इस पड़ाव पर पहली बार वह तनिक ऊहापोह में उलझ गई थी। हाँ, कुछ ऊहापोह में...!